ब्रेस्ट आयररिंग: प्रथा, सुरक्षा और शोषण

डॉ. अवधेश कुमार

पोस्ट डॉक्टोरल फेलो (यू .जी. सी)

समाजशास्त्र विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

अमित कुमार झा

UGC-Net समाजशास्त्र

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

सरांशिका - किसी भी संस्कृति का एक अहम हिस्सा प्रथा होता है जो उस क्षेत्र विशेष कि आवश्यकता के अनुसार विकसित होता है | विश्व में कई प्रकार कि ऐसी प्रथा है मुख्य रूप से स्त्रियों से जुड़ी होती है | इन प्रथाओं के कारण स्त्रियों का शोषण भी हुआ है |ऐसी ही एक प्रथा ब्रेस्ट आयररिंग कि प्रथा है जो कैमरून क्षेत्र के आस- पास के व्यापक भाग में पाया जाता है | इस प्रथा के लड़कियों के यौन सुरक्षा के नाम पर उसके स्तनों के विकास को रोकने का प्रयास किया जाता है |इस प्रथा के कारण उन्हें कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक कष्टों का सामना करना पड़ता है | जिसका एक व्यापक प्रभाव सम्पूर्ण जीवन पर पड़ता है | प्रस्तुत लेखन में ब्रेस्ट आयररिंग के प्रथा को समझने का प्रयास किया जा रहा है |

मुख्य शब्द - प्रथा, ब्रेस्ट आयररिंग, यौन सुरक्षा, कैमरून क्षेत्र |

प्रस्तावना- विश्व के सभी संस्कृति के विकास को विहंगम दृष्टि से अवलोकित करे तो हमें यह संज्ञान होता है की, विश्व के सभी प्राचीन संस्कृतियों का निर्माण एक निश्चित क्रम में हुआ है | इन संस्कृतियों ने समय के साथ अपने अंदर समाहित तत्वों को आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित किया है |यह संस्कृति ही है जो एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक होता है |किसी विद्यमान संस्कृति को संवृद्ध एवं परिष्कृत करने में परिवार महत्वपूर्ण योगदान देती है | परिवार समाज की निर्माणक इकाई (forming unite) है | परिवार में स्त्री, पुरुष और उसके बच्चे होते है | विश्व के सम्पूर्ण इतिहास को एक सरसरी दृष्टि से अवलोकित करे तो कमोबेश सभी समाज में स्त्री की स्थिति लगभग समान ही रही है | वो कही न कही समाज को संचालित करने वाले पितृसत्तात्मक व्यवस्था से शोषित रही है |

विश्व के प्रत्येक समाज में पितृसत्तामक व्यवस्था को प्रभावी एवं अनुकरणीय बनाये रखने के लिये संस्कृति के अंदर ही कुछ ऐसे प्रथा का निर्माण किया जाता है जो पुरुष को केंद्र में स्थापित करता है और महिलाओं को अधीनस्थ स्थिति में रख उसका शोषण करता है | कोई भी प्रथा समाज में अचानक से उत्पन्न नहीं होता है बल्कि यह व्यक्तिगत आदत से विकास करते हुये प्रथा के रूप में समाज में आते है | समनर ने अपनी पुस्तक फोकवेज (folkways) में संस्था के विकास में प्रथा पर व्यापक चर्चा की है |

कोई भी व्यक्तिगत आदत जब प्रथा के रूप में समाज में विकसित होता है तब तक वह समाज में अपनी पकड़ मजबूत कर चूका होता है | समाज के प्रत्येक सदस्य के आचार - विचार में में इसका प्रभाव दिखने लगता है |समाज के सदस्य को इसे नकारना लगभग नहीं के बराबर हो जाता है | समाज में प्रथा को तर्क की दृष्टि से बहुत कम व्यक्ति ही देखता है समाज बस उसका अनुकरण करता है |

विश्व के प्रत्येक समाज में हमें कुछ ऐसे प्रथा अवश्य ही दिखायी देता है |जो सदियों से चली आ रही है और उसके मूल में स्त्री शोषण निहित होता है | कही -कही पर इन प्रथाओं को महिलाओं ने अपने प्रतिष्ठा से जोड़कर भी देखती है | जिसके कारण कही - कही पर स्त्रियां इन प्रथाओं पर प्रश्न चिन्ह भी नहीं लगाती है | बदलते समय के साथ इन प्रथाओं ने सामजिक विषमताओं को जन्म दिया है | जिसका प्रभाव आने वाले पीढ़ी के लिये अहितकर हो सकता है |

विश्व के किसी भी समाज में प्रथा का विकास अचानक नहीं हो जाता है बल्कि इसका विकास एक बृहद प्रक्रिया के तहत कई वर्षों के दौरान होता है जिसे समनर ने अपनी पुस्तक फोकवेज में समझाने का प्रयास किया है | प्रथा ही अपने विकसित अवस्था में पहुँच कर एक संस्था का रूप धारण करता है | व्यक्तिगत आदत विकसित होकर ही प्रथा और संस्था के रूप स्थयित्व को प्राप्त करता है |जब व्यक्तिगत आदत संस्था का रूप धारण करती है तो समाज में इसकी जड़े और भी गहरी एवं मजबूत हो जाती है |समाज के प्रत्येक व्यक्ति इसे सामाजिक जीवन में अंगीकृत कर लेता है | विश्व के ऐसे की कुछ प्रथाओं के बारे में समझने का प्रयास किया जा रहा है |

ब्रेस्ट आयररिंग - मानव समाज के विकास के प्रारम्भिक दौर में ही स्त्री के यौनिकता को नियंत्रण करने का प्रयास होने लगा था | जिसके कारण ही विवाह एवं परिवार संस्था का विकास हुआ |जिसके द्वारा स्त्री के यौनिकता पर किसी व्यक्ति या परिवार का नियंत्रण होता था | बढ़ते समय के साथ स्त्रियों के प्रति यौन हिंसा ही घटना सार्वजनिक जगहों पर बढ़ने लगी जिसको नियंत्रण करना भी समाज के लिए आवश्यक था | महिला के प्रति बढती हुयी यौन हिंसा कि घटना एक वैश्विक घटना थी | जो प्राय: संस्कृति ,सामाजिक -आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर पर देखने को मिलता है | इस प्रकार के यौन शोषण से खुद को बचाने की जिम्मेदारी भी उसी महिला वर्ग पर था जो स्वयं इसका भुक्त भोगी था | स्त्रियों के प्रति बढ़ती हुयी यौन हिंसा को रोकने के लिए विश्व में कुछ ऐसे प्रथा का जन्म हुआ जो उस क्षेत्र विशेष की संस्कृति का एक अहम हिस्सा बन गया है |इन्हीं प्रथा में एक प्रथा ब्रेस्ट आयरनिंग की प्रथा है |यह प्रथा कैमरून के आस-पास के क्षेत्रों में व्यापक रूप से पाया जाता है | इन क्षेत्रों में बेनिन ,चाड, जिम्बाम्बे ,पश्चिमी एवं मध्य अफ्रीका जैसे विशाल भूभाग आते है | कैमरून के आस -पास लगभग २०० नृजातीय समूह के संस्कृति के एक अहम हिस्सा ब्रेस्ट आयररिंग है | विश्व की लगभग ४० लाख महिला ब्रेस्ट अयररिंग की प्रथा से प्रभावित है | वर्तमान समय में इसके चर्चा में आने के एक प्रमुख कारण है इस प्रथा का यू. के जैसे विकसित क्षेत्रों में भी प्रयोग होने लगा है |

क्या है ब्रेस्ट अयररिंग - यह एक ऐसी बेहद दर्दनाक प्रथा है जिसमें लड़कियों को उसके मासिक धर्म के प्रारम्भ होने के समय किया जाता है | मासिक धर्म के प्रारम्भ होने के समय हार्मोन के परिवर्तन के कारण कुछ विशिष्ट शारीरिक लक्षण उत्पन्न होने लगते है | जो उन्हें पुरुष से अलग रखने

का प्रयास करता है | इन शारीरिक लक्षणों में एक विशिष्ट लक्षण है स्तन का विकास होना | इस प्रथा के द्वारा प्राकृतिक रूप से विकसित हो रहे स्तन को रोकने का प्रयास किय जाता है | ताकि उसके अंदर वयस्क होने के लक्षण न दिखाई दे और वे किसी भी प्रकार के यौन हिंसा से लम्बे समय तक बची रहे |

ब्रेस्ट आयररिंग की प्रक्रिया - यह प्रथा लड़कियों के साथ उस समय की जाती है जब वह लगभग १० वर्ष की आयु को प्राप्त कर चुकी होती है | ब्रेस्ट आयररिंग की प्रक्रिया ३से ४ वर्ष की अवधि तक चलती रहती है | इस प्रक्रिया में में घर के किसी सदस्य (विशेष रूप से महिला) के द्वारा किया जाता है | जो निम्न में से कोई भी को सकता है -

लड़की स्वयं

माँ

दादी

बड़ी बहन

चाची

दाई (nonny) बाहरी सदस्य के रूप में

इसमें स्तन के उभार को कम कारने लिए ग्राइंडर पत्थर , लकड़ी का टुकड़ा ,पेड़ की पत्ती, नारियल के खोल का प्रयोग किया जाता है | इस सभी पदार्थो में से किसी एक को आग पर गर्म कर लड़की के स्तन पर इससे मालिश किया जाता है | जिससे स्तनों के पास एकत्रित वसा के ऊतकों को धीरे -धीरे पिघलाया जा सके और एक लम्बे समय में स्तन समतल हो जाता है | ऐसा एक हफ्ते में ३ से ४ बार किया जाता है | इसके बाद स्तन को किसी बेल्ट से कशकर बांध दिया जाता है जो उसके विकास को रोके रखता है |

ब्रेस्ट आयररिंग के प्रमुख कारण- किसी भी प्रथा का प्रारम्भ यूही नहीं हो जाता है यह एक व्यक्तिगत आदत से प्रारम्भ होती और एक लम्बी प्रक्रिया के द्वारा लोग इसे अपने सामाजिक जीवन में स्वीकृत करता है | जब भी किसी प्रथा का प्रारम्भ होता है तो उसके अंदर तत्कालीन समाज की आवश्यकता निहित होती है एवं सामजिक कल्याण की भावना एक प्रथा में निहित होता है | इसी प्रकार ब्रेस्ट आयररिंग की प्रथा के पीछे प्रमुख कारण निम्न है -

१. इस प्रथा के पीछे एक प्रमुख कारण यह है की इसके द्वारा लड़की को यौन शोषण एवं बलात्कार जैसे कृत्य से बचाने के लिये इस दर्दनाक प्रथा का सामना लड़की को करना होता है |

२. इस प्रथा के द्वारा कम उम्र में ही लड़की को गर्भ धारण करने से रोका जाता है ताकि उनके परिवार का नाम बदनाम ना हो |

३. लड़की अपनी शिक्षा को आसानी से पूरा कर सके और उन्हें कम उम्र में शादी ना करना पड़े और उसे अपने पहले यौन सम्बन्ध को स्थापित करने में बिलम्भ हो सके |

४. लड़की के यौवन अवस्था के प्रारम्भ होने चिन्ह को हटाया जा सके |

५. अवांछित पुरुषो कम उम्र में ही लड़कियों पर आकर्षित ना हो सके |

६. यह शीघ्र विवाह रोकने के साथ माताओं के इस चिंता को भी कम करती है कही कम उम्र में ही उभरे हुये स्तन उसके यौन उत्पीड़न का कारण ना बन जाये |

प्रभाव - ब्रेस्ट आयररिंग का एक व्यापक प्रभाव उस महिला के शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर देखने को मिलता है जो इस प्रथा का सामना करती है | इस प्रथा का एक व्यापक प्रभाव महिला के स्थान पर देखने को मिलता है | महिला के स्तन पर जीवन भर ब्रेस्ट आयररिंग का निशान रह जाता है |इसके और कुछ संभावित परिणाम महिलाओं के स्तन पर देखने को मिलता है जैसे - स्तन में अल्सर का होना , स्तनों के आकार में असमानता होना और निप्पलों का उल्टा होना | स्तनों में उत्पन्न इस प्रकार के विकृतियों के कारण उन्हें अपने बच्चों को स्तनपान कराने में कई प्रकार के कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है | कुछ महिलायें जीवनभर स्तनपान कराने में अक्षम हो जाती है | ब्रेस्ट आयररिंग के कारण लड़कियों के स्तन जल जाता है उन्हें ठीक होने में भी ३-४ हफ्ते लग जाता है | परन्तु चिकित्सिकीय सुविधा के आभाव में उन्हें स्तन कैंसर तक हो जाता है |

इस प्रथा का लड़कियों के ऊपर मनोवैज्ञानिक प्रभाव भी पड़ता है इस प्रथा से उसके अंदर एक स्थायी भय एवं शर्म का अनुभव होता है वह इस प्रथा को एक सजा के तौर पर देखती है जो उसे लड़की होने के कारण मिलता है | कई बार लड़कियां यह समझ नहीं पाती है की उसके साथ इस प्रकार की अमानवीय व्यवहार क्यों किया जा रहा है | इस प्रथा के कारण वो खुद को समाज से कभी -कभी बहिष्कृत समझने लगती है |

निष्कर्ष - वर्तमान समय में जब हम उत्तराधुनिक कि अवस्था में रह रहे तब यहाँ कहा तक उचित है कि लड़कियों के सुरक्षा के नाम पर उसके साथ इस प्रकार कि अमानवीय व्यवहार किया जाये | ब्रेस्ट आयररिंग कि प्रथा का प्रारम्भ एक पिछड़ी हुयी मानसिकता कि सोच है | वर्तमान समय में इस प्रकार के प्रथा पर पुनर्विचार कि आवश्यकता है | एक ऐसे स्वस्थ समाज कि स्थापना कि ओर प्रयास करना चाहिए जहाँ स्त्रियों कि सुरक्षा के नाम पर उनके साथ बहिष्कृत जैसा व्यवहार नहीं किया जाये |

सन्दर्भ सूची-

1. Smith. D. Merrile, Cultural encylopedia of the breast, 2014, rowmns s littlefield ,lanham , Maryland .
2. Taylor-victoria pills, Cultural encylopedia of the body vol-1, 2008, greenwood press , London .
3. https://www.hindustantimes.com/world-news/several-pre-teen-girls-subjected-to-breast-ironing-in-uk-report/story-YKa7nXekrBzBnn3LGyKk5N.html
4. https://www.researchgate.net/publication/303407296_The_Social_Context_of_Breast_Ironing_in_Cameroon
5. https://www.theguardian.com/global-development/2019/jan/26/revealed-dozens-of-girls-subjected-to-breast-ironing-in-uk
6. https://allafrica.com/stories/201804110675.html
7. Rosaline Ngunshi Bawe (August 2011). "Breast Ironing... A harmful practice that has been silenced for too long" *Gender Empowerment and Development*